Self Respect

09-07-2014

✓रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, रूहानी बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है | यह तो बच्चों को समझाया है |

✓ब्रह्मा का दिन और रात सो ब्राह्मणों का दिन और रात | सच्चे मुख वंशावली ब्राह्मण तुम हो | वह तो हैं कलियुगी कुख वंशावली ब्राह्मण | तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण | यह बातें और कोई नहीं जानते |

- ✓दुःख हर्ता, सुख कर्ता तो एक ही बाप है | देवताओं को भी नहीं कहेंगे | कृष्ण भी देवता हो गया | भगवान् नहीं कह सकते | यह भी समझते नहीं | जो समझते हैं वह ब्राह्मण बन औरों को भी समझाते रहते हैं | जो राज्य पद के अथवा आदि सनातन देवता धर्म के हैं वह निकल आते हैं |

- ✓सिर्फ एक अमृतसर में नही, सभी मनुष्यों का अकालतख्त है । आत्मा अकाल मूर्त है । यह शरीर बोलता चलता है । अकाल आत्मा का यह चैनन्य तख्त है । अकाल मूर्त तो सभी हैं बाकी शरीर को काल खा जाता है । आत्मा तो अकाल है ।

✓भगवानुवाच-मैं तुमको राजाओं का राजा, डबल सिरताज स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ ।

✓यह विश्व में शान्ति स्थापन हो रही है । आदि सनातन देवी- देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं जो बाप स्थापन कर रहे हैं ।

✓रचता और रचना के आदि-मध्य- अन्त को हम ही जानते हैं । यह गीता का एपीसोड चल रहा है जिसमें भगवान् ने आकर राजयोग सिखाया है । डबल सिरताज बनाया है । यह लक्ष्मी- नारायण भी राजयोग से यह बने हैं । इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर बाप से राजयोग सीखते हैं ।

✓वरदान: सर्व पदार्थों की आसक्तियों से न्यारे अनासक्त, प्रकृतिजीत भय !

✓अच्छा! मीठे- मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद- प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।